संवाद साहित्यकारों से

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया

इन पत्रों में बहुत-सी ऐसी अंतरंग बातें हैं, जो अन्यत्र नहीं मिलेंगी। कई पत्र साहित्येतिहास के प्रसंगों की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। कई में नितांत निजी जीवन-संदर्भ हैं। छायावाद-प्रवर्तक पंडित मुकुटधर पांडेय, सरस्वती संपादक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, प्रख्यात विद्वान विजयेंद्र स्नातक, बाबू रामानुजलाल श्रीवास्तव, डॉ॰ किशोरीलाल, प्रो॰ प्रमोद वर्मा आदि के पत्र इसी प्रकार के हैं।

पत्र वैसे भी निजमन के भावों की सहज और अकृत्रिम अभिव्यक्ति होते हैं। नितांत निजी मनोजगत् इनकी विशेषता होती है, जहाँ पत्र-लेखक आडंबरमुक्त होकर अपने को व्यक्त करता है।

पत्रों का इतिहास बड़ा पुराना है। पत्रों ने रिश्तों को जोड़ा भी है और तोड़ा भी है। पत्रों का महत्त्व सदैव रहा है। आगे भी रहेगा। आज भी तमाम प्रतिष्ठित महान व्यक्तित्वों के पत्र संग्रहालयों में सुरक्षित हैं।

'संवाद : साहित्यकारों से' में विगत पचास वर्षों से सुरक्षित पत्रों में से कुछ नाम के वर्णक्रम से संगृहीत किए हैं। इसमें सन् 1958 ई॰ से सन् 2008 तक के चुने हुए पत्र हैं, जिनमें सर्वश्री मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त, वृंदावनलाल वर्मा, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, मुकुटधर पांडेय, डॉ॰ बलदेव प्रसाद मिश्र, डॉ॰ रामकुमार वर्मा, डॉ॰ हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ॰ विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ॰ शिवमंगलसिंह 'सुमन', डॉ॰ भगीरथ मिश्र,

संवाद साहित्यकारों से

डॉ॰ गंगाप्रसाद बरसैंया
के नाम साहित्यकारों के पत्र

हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर (उ॰प्र॰)

ISBN 978-93-80916-60-6

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य निकेतन
16 साहित्य विहार
बिजनौर (उ०प्र०)
फ़ोन : 01342-263232
ई-मेल : giriraj3100@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com
टाइप सैटिंग : अनुभूति ग्राफ़िक्स, बिजनौर (उ०प्र०)
आवरण : अनुभूति
मुद्रक : आदर्श प्रिंटर्स, दिल्ली 32
संस्करण : प्रथम 2013
मूल्य : दो सौ रुपए

SAMVAD SAHITYKARON SE (LETTERS) ED. BY DR. GANGA PRASAD GUPTA BARSAINYA
Rs.200.00

साहित्य की अमूल्य संपदा

एम॰ए॰ करने के बाद शोध के संदर्भ में कुछ प्रतिष्ठित विद्वानों के संपर्क में आया। शोध की समस्याओं को लेकर कतिपय विद्वानों से पत्राचार का अवसर मिला। उन दिनों टेलीफ़ोन का इतना प्रचलन नहीं था। मोबाइल तो थे ही नहीं। परस्पर संपर्क और भावों-विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम पत्र ही हुआ करते थे। तब के बड़े विद्वान अपेक्षाकृत बड़े सदाशयी थे। वे छोटे-से-छोटे और अपरिचित लोगों के पत्रों का उत्तर बड़ी उदारता से देते थे। उन पत्रों को पाकर समस्याओं का समाधान तो होता ही था, प्रेरणा भी मिलती थी। आंतरिक सुखानुभूति और गौरव का अनुभव होता था। आज के तथाकथित बड़े विद्वानों में ऐसी उदार सदाशयता बहुत कम देखने को मिलती है। सामान्यजनों के पत्रों का उत्तर न देना तथा अपने को अत्यधिक व्यस्त बताते हुए समयाभाव का रोना रोना आज का फ़ैशन बन गया है। पहले ऐसा नहीं था, जिसका प्रमाण संगृहीत ये पत्र हैं, जिनमें देश के साहित्य-जगत् के शीर्ष विद्वान सम्मिलित हैं।

पत्राचार मेरी दिनचर्या का अंग रहा है। मुझे इसमें बड़ा आनंद मिलता है। जब मेरी रचनाएँ देश की तमाम पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से छपने लगीं तो पचाचार राष्ट्रव्यापी बन गया। शिक्षा विभाग में सेवारत होने से शिक्षा-जगत् की अनेक विभूतियों और मित्रों से विस्तार हुआ। यह क्रम विगत पचास वर्षों से लगातार जारी है। समीक्षा-क्षेत्र में काम करने और कृतियों के छपने से व्यापकता और बढ़ी। पत्र-पत्रिकाएँ संपर्क-विस्तार में बड़ी सहायक होती हैं।

प्रतिदिन प्राप्त होनेवाले पत्रों में से मैं कुछ पत्र अपने पास सुरक्षित रखने लगा। इसके पीछे कौनसी दैवी प्रेरणा थी, मैं स्वतः नहीं जानता। मेरी कोई योजना भी नहीं थी। बड़े लोगों की लिखावट, हस्ताक्षर और विचार जानकर मुझे आंतरिक प्रसन्नता होती थी। समय-समय पर स्थानांतरण होने से सुरक्षित सामग्री के अस्त-व्यस्त और नष्ट होने का दंश भी झेलना पड़ा। इसका प्रभाव पत्रों पर भी पड़ा। इसके बावजूद बहुत-से पत्र सुरक्षित बचे रहे। पत्र लिखनेवाले उन लोगों

पचास वर्षों से सुरक्षित रखा, उसी प्रकार दैवी प्रेरणा हुई कि इन्हें संग्रह के रूप में प्रकाशित कर अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाया जाए। इस प्रकार ये पत्र सुरक्षित भी होंगे और अधिकतम लोगों तक पहुँचेंगे। इसमें 83 विद्वानों-आत्मीयजनों-लेखकों के पत्र संगृहीत हैं। कुछ के पत्रों की संख्या एक-दो है और कुछ की संख्या बीस-पच्चीस से भी अधिक है। उन सभी में कोई-न-कोई बात महत्त्वपूर्ण है। कई पत्र काफ़ी लंबे हैं। कुछ पत्रों का ऐतिहासिक महत्त्व है। इन पत्रों को प्रकाशित कराते हुए मैं अपार सुख-शांति का अनुभव कर रहा हूँ। लगता है कि अमूल्य संपदा नष्ट होने से बच गई। यह अमूल्य संपदा साहित्य-जगत को सौंपते हुए मैं कृतकृत्य हूँ। पत्रों को पत्र-लेखकों के नाम के हिंदी वर्णक्रमानुसार रखा गया है।

यहाँ इतना उल्लेख और करना चाहूँगा कि जब मैंने कुछ लोगों से उनके पत्रों के प्रकाशन की अनुमति चाही तो उन्होंने सहर्ष सहमति प्रदान की और यहाँ तक कहा कि वे अब आपकी संपत्ति है। आप उनका सदुपयोग करें। एक प्रसंग याद आ रहा है। लगभग डेढ़-दो दशक पूर्व एक साहित्यिक कार्यक्रम में महामहिम उपराष्ट्रपति डॉ॰ शंकरदयाल जी शर्मा के निवास पर डॉ॰ विजयेंद्र स्नातक जी से भेंट हुई। मैंने उन्हें अपना परिचय देते हुए सन् 1960 के लगभग उनके लिखे लंबे-लंबे पत्रों की याद दिलाई और कहा कि वे मेरे पास सुरक्षित हैं तो वे अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने उनकी छायाप्रति मँगवाई और कहा कि वे इन पत्रों का उपयोग अपनी कृतियों में करेंगे। उन्होंने मुझे भी सलाह दी कि इस प्रकार के पत्र कई दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होते हैं। संभव हो तो उनका संग्रह प्रकाशित कराया जाना चाहिए। आज उनकी सलाह इस रूप में सार्थक हुई।

संग्रह के कुछ पत्र समय-समय पर प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुए हैं, जिन्हें पढ़कर लोगों ने प्रसन्नता व्यक्त की थी। आज संग्रह रूप में प्रकाशित ये पत्र सभी को आह्लादित करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

डॉ॰ गंगाप्रसाद बरसैंया
सेवानिवृत प्राचार्य

12-एम॰आई॰जी॰, चौबे कालोनी
छतरपुर (म॰प्र॰) 471001
फ़ोन : 07682-241024
मो॰ : 09425376413
हिंदी दिवस सन् 2012

में से कई अब इस दुनिया में नहीं रहे। उनकी लिखावट में ही उनकी झलक मिलती है। उन पत्रों में बहुत-सी ऐसी अंतरंग बातें हैं, जो अन्यत्र नहीं मिलेंगी। कई पत्र साहित्येतिहास के प्रसंगों की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। कई में नितांत निजी जीवन-संदर्भ हैं। छायावाद-प्रवर्तक पंडित मुकुटधर पांडेय, सरस्वती संपादक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, प्रख्यात विद्वान विजयेंद्र स्नातक, बाबू रामानुजलाल श्रीवास्तव, डॉ॰ किशोरीलाल, प्रो॰ प्रमोद वर्मा आदि के पत्र इसी प्रकार के हैं।

पत्र वैसे भी निजमन के भावों की सहज और अकृत्रिम अभिव्यक्ति होते हैं। नितांत निजी मनोजगत् इनकी विशेषता होती है, जहाँ पत्र-लेखक आडंबरमुक्त होकर अपने को व्यक्त करता है। पत्रों का इतिहास बड़ा पुराना है। पत्रों ने रिश्तों को जोड़ा भी है और तोड़ा भी है। पत्रों का महत्त्व सदैव रहा है। आगे भी रहेगा। आज भी तमाम प्रतिष्ठित महान व्यक्तित्वों के पत्र संग्रहालयों में सुरक्षित हैं। वे देश की अमूल्य संपदा हैं।

'संवाद : साहित्यकारों से' शीर्षक से मैंने अपने पास विगत पचास वर्षों से सुरक्षित पत्रों में से कुछ इस संग्रह में नाम के वर्णक्रम से संगृहीत किए हैं। इसमें सन् 1958 ई॰ से सन् 2008 तक के चुने हुए पत्र हैं, जिनमें सर्वश्री मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त, वृंदावनलाल वर्मा, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, मुकुटधर पांडेय, डॉ॰ बलदेवप्रसाद मिश्र, डॉ॰ रामकुमार वर्मा, डॉ॰ हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ॰ विश्वनाथप्रसाद मिश्र, डॉ॰ शिवमंगलसिंह 'सुमन', डॉ॰ भगीरथ मिश्र, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', डॉ॰ विद्यानिवास मिश्र, डॉ॰ जगदीश गुप्त, जैनेंद्रकुमार, डॉ॰ गुलाबराय, डॉ॰ विजयेंद्र स्नातक, डॉ॰ विनयमोहन शर्मा, डॉ॰ लक्ष्मीमल सिंघवी, शांतिप्रिय द्विवेदी, केदारनाथ अग्रवाल, कमलेश्वर, पं॰ बनारसीदास चतुर्वेदी जैसे वरिष्ठ प्रतिष्ठित विद्वान शामिल हैं। ये पत्र उनके चिंतन तथा जीवनानुभवों पर प्रकाश डालते हैं।

एकाएक एक दिन मन में विचार आया कि मुझे अपना निजी पुस्तकालय किसी सार्वजनिक संस्था को दे देना चाहिए, ताकि मेरे बाद भी वह लोगों के उपयोग में आता रहे और सुरक्षित भी रहे। मेरे निजी संग्रह में अनेक महत्त्वपूर्ण दुर्लभ ग्रंथ हैं, जो अब अलभ्य हैं और अमूल्य हैं। तभी इन पत्रों का भी ख़्याल आया। लगा कि इतने प्रतिष्ठित साधक साहित्यकारों एवं आत्मीयजनों के पत्रों को नष्ट करना बड़ा भारी पाप और अपराध होगा। कोई दूसरा व्यक्ति भला इन्हें क्यों सुरक्षित रखेगा। अतः जिस प्रकार अज्ञात दैवी प्रेरणा से मैंने इन्हें

पत्र लेखक-क्रम

1.	अमृतराय	इलाहाबाद	11
2.	डॉ॰ आत्माराम शर्मा 'अरुण'	दिल्ली	11
3.	इमरे बंघा	आक्सफोर्ड	13
4.	डॉ॰ उदयभानु मिश्र	दिल्ली	18
5.	उदयशंकर दुबे	वाराणसी	19
6.	कन्हैयालाल शर्मा 'कलश'	गुरसराय	20
7.	कपिलदेव तैलंग	टीकमगढ़	24
8.	डॉ॰ कमलाप्रसाद	भोपाल	26
9.	कमलेश्वर	बंबई	29
10.	डॉ॰ कांतिकुमार जैन	सागर	30
11.	डॉ॰ किशोरीलाल	नैनी (इलाहाबाद)	32
12.	डॉ॰ कृष्णचंद्र वर्मा	ग्वालियर	40
13.	केदारनाथ अग्रवाल	बाँदा	45
14.	डॉ॰ कैलाश तिवारी	रीवा	46
15.	गंगाराम शास्त्री	भोपाल	48
16.	डॉ॰ गुलाब राय	आगरा	50
17.	गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर'	झाँसी	52
18.	चंद्रकांत देवताले	रतलाम	53
19.	डॉ॰ जगदीश गुप्त	इलाहाबाद	55
20.	डॉ॰ जयनाथ नलिन	पटियाला	56
21.	ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी	सागर	60
22.	डॉ॰ देवेंद्र दीपक	अंबिकापुर (अब भोपाल)	61
23.	द्वारिकाप्रसाद तिवारी 'विप्र'	बिलासपुर	63
24.	द्वारिकेश मिश्र	झाँसी	64
25.	नंद चतुर्वेदी	उदयपुर	66
26.	पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी	राजनंदगाँव	69

27. पूनम दइया	बीकानेर	72
28. प्यारेलाल गुप्त	बिलासपुर	73
29. डॉ॰ प्रभाकर श्रोत्रिय	दिल्ली	79
30. प्रमोद वर्मा	रायपुर	80
31. प्रीता व्यास	वेस्ट जावा	84
32. प्रेमशंकर	सागर	86
33. प्रेमशंकर रघुवंशी	हरदा	86
34. बंदे अली फ़ातमी	रायपुर	88
35. बनारसीदास चतुर्वेदी	फ़िरोजाबाद (आगरा)	90
36. डॉ॰ बलदेवप्रसाद मिश्र	राजनाँदगाँव	92
37. बालकवि बैरागी	मनासा (मंदसौर)	93
38. डॉ॰ ब्रजेश्वर वर्मा	इलाहाबाद	94
39. डॉ॰ भगवानदास माहौर	झाँसी	95
40. डॉ॰ भगीरथ मिश्र	सागर	98
41. डॉ॰ भालचंद्र राव तैलंग	औरंगाबाद	99
42. मनहर चौहान	दिल्ली	102
43. डॉ॰ महेंद्रप्रतापसिंह	दिल्ली	105
44. मावलीप्रसाद श्रीवास्तव	रायपुर	108
45. मुकुटधर पांडेय	रायगढ़	112
46. मेहरुन्निसा परवेज़	जगदलपुर	122
47. मैथिलीशरण गुप्त	चिरगाँव	123
48. डॉ॰ रघुवीर सिंह	दिल्ली	123
49. डॉ॰ रमेशचंद्र मेहरोत्रा	रायपुर	125
50. डॉ॰ राजबली पांडेय	जबलपुर	127
51. डॉ॰ राजमल बोरा	औरंगाबाद	127
52. डॉ॰ राजेश्वर गुरु	रायपुर	128
53. डॉ॰ राधिकाप्रसाद त्रिपाठी	फैजाबाद	129
54. डॉ॰ रामकुमार वर्मा	इलाहाबाद	130
55. डॉ॰ रामनारायण उपाध्याय	खंडवा	130
56. डॉ॰ राममूर्ति त्रिपाठी	उज्जैन	131
57. डॉ॰ रामस्वरूप आर्य	बिजनौर	132

58. डॉ॰ रामानंद शर्मा	मुरादाबाद	133
59. रामानुजलाल श्रीवास्तव	जबलपुर	136
60. रामेश्वर शुक्ल अंचल	जबलपुर	145
61. लक्ष्मीकांत 'सरस'	मद्रास	147
62. डॉ॰ लक्ष्मीधर मालवीय	जापान	149
63. डॉ॰ लक्ष्मीमल्ल सिंघवी	दिल्ली	152
64. लीलाधर मंडलोई	दिल्ली	153
65. डॉ॰ विजयबहादुरसिंह	विदिशा	153
66. डॉ॰ विजयेंद्र स्नातक	दिल्ली	155
67. डॉ॰ विद्यानिवास मिश्र	वाराणसी	161
68. डॉ॰ विनयमोहन शर्मा	भोपाल	161
69. पं॰ विश्वनाथप्रसाद मिश्र	वाराणसी	163
70. शांतिप्रिय द्विवेदी	वाराणसी	164
71. डॉ॰ शिवमंगलसिंह 'सुमन'	उज्जैन	165
72. शिवानी (गौरी पंत)	लखनऊ	166
73. डॉ॰ श्यामसुंदर दुबे	हटा (दमोह)	167
74. डॉ॰ श्यामसुंदर बादल	राठ (हमीरपुर)	167
75. डॉ॰ संतोषकुमार तिवारी	सागर	169
77. डॉ॰ संसारचंद्र	जम्मू	171
77. सियारामशरण गुप्त	चिरगाँव	172
78. डॉ॰ सियारामशरण शर्मा	मुजफ़्फ़रपुर	172
79. डॉ॰ हज़ारीप्रसाद द्विवेदी	वाराणसी	173
80. डॉ॰ हरवंशलाल शर्मा	झाँसी	174
81. पं॰ हरिहरनाथ द्विवेदी	ग्वालियर	174
82. हरीश भादानी	बीकानेर	175
83. क्षेमचंद्र सुमन	दिल्ली	176

रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', डॉ॰ विद्यानिवास मिश्र, डॉ॰ जगदीश गुप्त, जैनेंद्रकुमार, डॉ॰ विजयेंद्र स्नातक, डॉ॰ विनयमोहन शर्मा, डॉ॰ लक्ष्मीमल सिंघवी, शांतिप्रिय द्विवेदी, केदारनाथ अग्रवाल, कमलेश्वर, पं॰ बनारसीदास चतुर्वेदी. जैसे वरिष्ठ प्रतिष्ठित विद्वान शामिल हैं। ये पत्र उनके चिंतन तथा जीवनानुभवों पर प्रकाश डालते हैं।

डॉ॰ गुप्त के निजी संग्रह में अनेक महत्त्वपूर्ण दुर्लभ ग्रंथ हैं, जो अब अलभ्य हैं और अमूल्य हैं। तभी उन्हें इन पत्रों का भी ख़्याल आया। लगा कि इतने प्रतिष्ठित साधक साहित्यकारों एवं आत्मीयजनों के पत्रों को नष्ट करना बड़ा भारी पाप और अपराध होगा। कोई दूसरा व्यक्ति भला इन्हें क्यों सुरक्षित रखेगा। अतः जिस प्रकार अज्ञात दैवी प्रेरणा से उन्होंने इन्हें पचास वर्षों से सुरक्षित रखा, उसी प्रकार दैवी प्रेरणा हुई कि इन्हें संग्रह के रूप में प्रकाशित कर अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाया जाए। इस प्रकार ये पत्र सुरक्षित भी होंगे और अधिकतम लोगों तक पहुँचेंगे। इसमें 83 विद्वानों-आत्मीयजनों-लेखकों के पत्र संगृहीत हैं। कुछ के पत्रों की संख्या एक-दो है और कुछ की संख्या बीस-पच्चीस से भी अधिक है। उन सभी में कोई-न-कोई बात महत्त्वपूर्ण है। कई पत्र काफ़ी लंबे हैं। कुछ पत्रों का ऐतिहासिक महत्त्व है। इन पत्रों के प्रकाशित होने पर लगता है कि अमूल्य संपदा नष्ट होने से बच गई।

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया